ब्रह्माण्ड पुराण में भूगोल विषयक ज्ञान

गिरिजेश त्रिपाठी*

पुराणों में भूगोल एवं खगोल सम्बन्धी विषयों की व्यापक चर्चा की गई है। पुराणों में भूगोल का जो ज्ञान अन्तर्निहित है वह दो रूपों में है– प्रथम है पूरे संसार का भूगोल तथा दूसरा है भारत वर्ष का भूगोल। सामान्यतः माना जाता है कि संसार के भूगोल वर्णन में कल्पना का तत्व अधिक है जबकि भारत वर्ष का भूगोल विषयक ज्ञान यथार्थ के बिल्कुल निकट है। किन्तु गहराई से देखने पर पता चलता है कि पुराणकारों को समस्त संसार के भूगोल का विशद् ज्ञान था, लगभग सम्पूर्ण पृथ्वी के भूमिखण्डों का यथार्थ ज्ञान पुराणों में निहित है। किन्तु विद्वान इसे काल्पनिक इसलिए मान लेते है क्योंकि पुराणकारों ने जिन स्थानों, भूखण्डों का वर्णन पुराणों में किया है उनकी अंसदिग्ध पहचान अभी तक नहीं हो पायी है। समय के चक्र में उन अनेक स्थानों के नामों में वहां की भाषा, संस्कृति सभ्यता आदि में परिवर्तन हो चुका है संभवतः इसलिए भी पौराणिक प्राचीन भूखण्डों की स्पष्ट पहचान में समस्या आयी है। फिर भी कुछ उत्साही विद्वानों ने अनेक पौराणिक द्वीपों, पर्वतों, नदियों की पहचान सफलतापूर्वक की है। किन्तु भारतवर्ष के भूगोल संबंधी विवरण जो पुराणों में मिलते है वह स्पष्ट है एवं असंदिग्ध है।

पुराण में भुवनकोष एक विशद् विषय के रूप में वर्णित है। इसके अन्तर्गत विश्व के सभी भूखण्डों का नाम, उनका स्वरूप तथा विस्तार एवं वहां के लोगों, वन आदि का विशद वर्णन किया गया है। इस समस्त भू–विन्यास के केन्द्र में मेरू (सुमेरू) पर्वत को रखा गया है।

ब्रह्माण्ड पुराण में भुवनकोष का प्रतिपादन विशद् रूप से किया गया है। इस महापुराण के पूर्वभाग के अनुषंगपाद के अन्तर्गत अध्याय 15 से लेकर अध्याय 20 तक में क्रमशः पृथ्वी के आकार और इसके विस्तार, भारतवर्ष का वर्णन, किं–पुरूष आदि देश का वर्णन, जम्बूदीप का वर्णन, लक्ष्यदीप का वर्णन तथा राक्षस दानव या असुर जाति से सम्बन्धिक अधोलोक वर्णन। इसके अतिरिक्त आदित्य व्यूह वर्णन तथा देवग्रहों के वर्णन से खगोल सम्बन्धी जानकारी ब्रह्माण्ड पुराण में मिलती है।

पुराणों में पृथ्वी को पद्मपुष्प की भांति स्वीकार किया गया है और इसकी कर्णिका अर्थात् मध्यभाग में सुमेरू पर्वत की स्थिति है। जिस प्रकार कमल के मध्यभाग से चारों ओर उसकी पंखुड़ियां निकलती है उसी प्रकार मेरू पर्वत की स्थिति है, वह पृथ्वी रूपी कमल की कर्णिका है। वायु पुराण का कथन है –

अव्यक्तात् पृथिवीपद्मं मेरूपर्वत कर्णिकम्।

ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार मेरू पर्वत अव्यक्तजन्मा ब्रह्म की नाभि से उत्पन्न हुआ है–'नाभिबन्धन सम्भूतो ब्राह्मणों अव्यक्तजन्मनः' यही बात मत्स्य पुराण में बिल्कुल इन्हीं शब्दों में कही गई है। कहने का अर्थ यही है कि मेरू पर्वत् ब्रह्मा की सृष्टि पृथ्वी की नाभि स्थल है अर्थात् केन्द्र है और इसी नाभि (मेरू) को मूल मानकर भुवनकोष की व्याख्या की गई है। पुराणों के अनुसार मेरू पर्वत इलावृत्त वर्ष के मध्य में अवस्थित है और यही जम्बूद्वीप के केन्द्र के रूप में भी है। इलावृत्त की चारों दिशाओं में चार पर्वत जैसे मेरू पर्वत, को आलम्बन देते हुए स्तम्भों की भांति है। पूर्व में मन्दर, दक्षिण में गन्धमादन, पश्चिम में दिशा में विपुल तथा उत्तर में सुपार्श्व। यद्यपि ब्रह्माण्ड पुराण में गन्धमादन की स्थिति मेरू के पश्चिम में बताई गई है– तस्य प्रतीच्यां वेयः पर्वतों गन्धमादनः। इस मेरू पर्वत तथा आकार (प्रमाण) ब्रह्माण्ड पुराण में वृत्ताकार बताया गया है और यह चारों ओर से एक समान ऊंचा है तथा इसके पार्श्व में नाना वर्णों की स्थिति है–

वृत्ताकृतिप्रमाणश्च चतुरस्र समुच्छ्रितः।
नानावर्णास्तु पार्श्वेषु प्रजापति गुणन्वितः।।

ब्रह्माण्ड पुराण एवं वायु पुराण में मेरू को 'प्रजापति गुणान्वितः' बताया गया है अर्थात् यह प्रजापति के गुणों से युक्त है। पुराणोक्त विवरण के आधार पर इतना तो स्पष्ट है कि मेरू कोई विशिष्ट पर्वत है, जिसकी पुराणों में की गई चर्चा के आधार पर वर्तमान अवस्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है।

मेरू की सही सही पहचान करने का प्रयास अनेक विद्वानों ने किया है। जैसा कि पुराणों में वर्णित है– मेरू एक विशिष्ट पर्वत है, अनेक पर्वत श्रेणियां इससे निकलकर चारों दिशाओं में प्रकीर्ण होती है। बहुत सारे विद्वानों का मानना है कि आज का पामीर ही पुराणोक्त मेरू पर्वत है। डा0 आर0 जी हर्षे ने अनेक सबल युक्तियों एवं भौगोलिक चिन्तन के आधार पर मेरू पर्वत को अलताई पर्वत क्षेत्र में अवस्थित बताया है। आज के एशियाई मानचित्र में यह अल्ताई पर्वतश्रेणी प0 साइबेरिया तथा मंगोलिया में स्थित है। पुराणों में मेरू के दक्षिण में क्रमशः निषध पर्वत श्रेणी, हेमकूट पर्वतश्रेणी तथा हिमवान् (हिमाचल) की स्थिति बताई गई है। एशियाई मानचित्र में अलताई के द0 में थिए नशान' व 'कूडानलून' पर्वतश्रेणी है जो क्रमशः निषध व हेमकूट के प्रतिनिधि स्वीकार किए जा सकते है। जैसा कि हम जानते है कूडानलून पर्वत श्रेणी के दक्षिण में है। जैसा कि हम जानते है कूडानलून' पर्वत श्रेणी के दक्षिण में हिमालय की अवस्थिति है। डॉ0 हर्षे ने अन्य सबल तर्क भी किए है। जैसे–अलताई

*शोध छात्र, प्राचीन इतिहास विभाग, लखनऊ वि०वि०

मंगोलियन भाषा का शब्द है, और इसका अर्थ है– 'सुवर्ण का पर्वत' और जैसा कि सर्वत्र पुराणों में मेरू को 'सुवर्ण पर्वत', 'हिरण्यपर्वत' कहा गया है। पुराणों में मेरू के चारों ओर जिस प्रकार पर्वतों व नदियों के होने की बात की गई है उसका साम्य भी अल्ताई पर्वत से बैठता है। आचार्य बलदेव उपाध्याय भी डॉ0 हर्षे के प्रमाणों से सहमत है। डॉ0 हर्षे ने इस वर्तमान अल्ताई पुराणोक्त मेरू को आर्यों का मूल स्थान माना है।

ब्रह्माण्ड पुराण के अध्याय 15 के श्लोक संख्या 48 में मेरू पर्वत के चारों ओर चार महाद्वीपों की स्थिति भी बताई गई है। इनका वर्णन मत्स्य और वायु में भी है। मत्स्य पुराण में कहा गया है।

स तु मेरूः परिवृतो भुवनैर्भूत भावनैः।
यस्येमे चतुरो देशा नाना पार्श्वषु संस्थिताः।।
भद्राश्वं भारतं चैव केतुमालं च पश्चिमे।
उत्तराश्चैव कुरवः कृतपुष्य–प्रतिश्रयाः।।

मेरू के पूर्व की ओर भद्राश्व महाद्वीप, प0 में केतुमाल, उत्तर में उत्तरकुरू तथा दक्षिण में भारत (जम्बूद्वीप) है। इन चारों महाद्वीपों की वर्तमान स्थिति की पहचान बहुत कठिन नहीं है। भ्रदाश्व– (भद्र+अश्व) का अर्थ है– भद्र घोड़ा यह चीन देश को इंगित करता है। आक्सस नदी का प्रदेश केतुमाल है इसमें वर्तमान रूस व अन्य पूर्व सोवियत संघ के देश आते है। उत्तर कुरू सम्भवतः टॉलमी द्वारा वर्णित ओत्तोरी कोराई देश है जो शायद चीनी तुर्किस्तान को संकेतित करता है। भारत तो अपना भारत वर्ष है। इन सभी महाद्वीपों में हर एक में एक विशेष पर्वत, नदी, वृक्ष, झील और आराध्य के रूप में किसी विशिष्ट भगवान की स्थिति भी बताई गई है।

प्रारम्भ में पुराणों में भुवनकोश के अन्तर्गत पृथ्वी को चार द्वीपों से घिरा बताया गया, जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। किन्तु पुराणों के बाद के संस्करणों में सात द्वीपों का सिद्वान्त स्वीकार किया गया है। विभिन्न पुराणों में इनका क्रम भले ही अलग–अलग हो किन्तु लगभग सभी में जम्बूद्वीप की अवस्थिति मध्य में बताई गई है और यह शेष अन्य द्वीपों द्वारा घिरा हुआ है। जबकि सभी द्वीप आपस में एक एक समुद्र के द्वारा अलग किए गये है। इन द्वीपों के पौरामिक नाम निम्नवत है–

1. जम्बूद्वीप (यह लवण समुद्र से)
2. प्लक्ष द्वीप (यह इक्षुरस समुद्र से)
3. कुश द्वीप (यह घृत समुद्र से)
4. शाक द्वीप (क्षीर समुद्र से)
5. शाल्मलि द्वीप (यह सुरा समुद्र से)
6. क्रौंच्च द्वीप (यह दधि समुद्र से)
7. पुष्कर द्वीप (यह स्वादु समुद्र से)

ब्रह्माण्ड पुराण में इन द्वीपों का क्रम इस प्रकार है– 1. जम्बू, 2. प्लक्ष, 3. शाल्मलि, 4. कुश, 5. क्रौन्च, 6. शाकद्वीप तथा 7. पुष्कर द्वीप। इनमें से प्रत्येक अपने से पूर्व वाले द्वीप से आकार में दो गुना है। प्रत्येक द्वीप में सात नदियां एवं सात पर्वत तथा एक दिव्य वृक्ष है। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार प्लक्षद्वीप से लवण समुद्र चारों ओर से घिरा हुआ है, वहां पर पुण्य जनपद है और वहां के निवासी मनुष्य चिरमल तथा मृत्यु से प्राप्त नहीं होते।

तेनावृतः समुद्रो वै द्वीपेन लवणोदकः।
तत्र पुण्या जनपदाश्यिान्न म्रियते जनः।।

इस प्लक्षद्वीप की वर्तमान भौगोलिक स्थिति के बारे में ठीक –ठीक अनुमान लगाना बहुत दुष्कर है। इसे इक्षुरस से वेष्ठित बताया गया है जिससे लगता है यहां इक्षु (गन्ने) की खेती बहुतायत में होती होगी।

ब्रह्माण्ड पुराण में प्लक्ष द्वीप के बाद शाल्मलि द्वीप का विस्तार से वर्णन है। यह प्लक्षद्वीप से दोगुने विस्तार का है। यहां भी सात पर्वत है जो रत्न प्रदान करने वाले है।

ब्रह्माण्ड पुराण में चौथे द्वीप के रूप में कुश द्वीप का वर्णन है। इस द्वीप के चारों ओरसे सुरा समुद्र घिरा हुआ है। शाल्मलि द्वीप से यह आकार में दोगुना है। कुशद्वीप के सन्दर्भ में कुछ प्राचीन फारसी लेखों में जानकारी मिलती है। पार्थियन सम्राट दारा प्रथम के हमदान लेख में उसके साम्राज्य की सीमा बताई गई है। इसमें कहा गया है कि सोग्डियाना के उस पार शकों के देश से कुश तक तथा सिन्ध से लेकर स्वर्दा (एशिया माइनर में सारडिस नामक स्थान) तक ये उसके राज्य की सीमा है। स्पष्ट रूप से यहां कुश देश की चर्चा है। यहां दो संभावनाएं बनती हैं– प्रथम, कुश देश हिन्दुकुश एवं आसपास का क्षेत्र हो सकता है किन्तु यहां केवल नाम का साम्य मिलता है। दूसरा (जैसा कि कुछ विद्वान मानते है) इसे इथियोपिया या मिस्र के मध्य भाग के रूप में पहचान देते है। यदि प्राचीन फारसी सम्राटों के लेखों पर ध्यान दें तो वहां कुश तथा मुद्राय (मिस्र) दोनों की गणना अलग–अलग प्रान्तों के रूप में की गई है। आचार्य बलेदव उपाध्याय संभवतः इसीलिए कुश की स्थिति मिस्र से बाहर अफ्रीका के पूर्वोत्तर भाग में कहीं मानते है। ब्रह्माण्ड पुराण में कुशद्वीप के बाद क्रौच्च द्वीप का वर्णन है। किन्तु इसकी असंदिग्ध पहचान कठिन है।

शाकद्वीप के विषय में जो पौराणिक जानकारी है वह भौगोलिक अस्तित्व के काफी निकट है। इसके सात पर्वतों के मत्स्यपुराण में दो–दो नाम मिलते है। सम्भवतः एक नाम तो पौराणिक (भारतीय) है और दूसरा नाम संभवतः शक जाति के लोगों द्वारा प्रदत्त है। पुराणों में इस द्वीप का इतना विस्तृत वर्णन है कि इसके आधार पर इसकी भौगोलिक अवस्थिति का काफी हद तक सही अनुमान लगाया जा सकता है।

पुराणों में शकद्वीप का जो भूगोल दिया गया है वह हेरोडोटस नामक यूनानी लेखक द्वारा दिए गये शक देश

के भूगोल से लगभग पूरी तरह मिलता है। नन्दलाल डे नामक विद्वान ने अपनी पुस्तक में पौराणिक शकद्वीपीय नामों का साम्य यूनानी नामों से करने का सफल प्रयास किया है–

संस्कृत नाम	यूनानी नाम
कुमुद	कौमोरेई
सुकुमार	कोगोरेई
इक्षु	आकसस
श्यामगिरि	मुस्तामूग

(इसका अर्थ है कालापर्वत) यह अवेस्ता में वर्णित श्यामक गिरि

जलंधार	सलतेरोई
मूग	मर्गिआना (मर्व)
मशक	मस्सगेतोई
सीता	सीरदरया
शकद्वीप	सीदिया

जिन शक द्वीपीय जातियों का उल्लेख पुराणों में है वह ऐतिहासिकतथ्यों से भी पुष्ट होती है। भविष्य पुराण के अनुसार शकद्वीप में चार जातियां निवास करती थीं जो भारत के चार वर्णों की प्रतिनिधि मानी जा सकती है–

तत्र पुण्या जनपदाश्चतुर्वर्ण समन्विताः।
मगाश्च मगगाश्चैव गानगा मन्दगास्तथा।।
मगाः ब्रह्मण भूयिष्ठा मगात्राः क्षत्रियाः स्मृताः।
वैश्यास्तु गानगा ज्ञेयाः शूद्रास्तेषां तु मन्दगाः।।

भविष्य पुराण के आधार पर कहा जा सकता है कि शकद्वीप की जातियां चार वर्णों में बंटी है– ब्राह्मण (मग) क्षत्रिय (मगग) वैश्य (गानग) तथा शूद्र (मन्दग)।

मग शब्द के कुछ अन्तर के साथ दो और पाठ भी मिलते है– सग और मद। इसमें सग तो शक का ही रूपान्तर है जबकि मद को ईएनी जाति माद से जोड़कर देखा जा सकता है जिसका उल्लेख असीरिया के 9वीं श. ई.पू. के लेखों में हुआ है। पारसीक पुरोहित को 'मगुस' कहा गया है। इसे ही यूनानियों के यहां 'मगि' या 'मागि' या 'मेगास' के रूप में वर्णित किया गया है। बाइबिल में भी मागि शब्द का प्रयोग पूर्व के विद्वान लोगों के अर्थ में किया गया है जिन्होंने ईसा के जन्म के अवसर पर महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की थी। ये मग सूर्योपासक ब्राह्मण थे।

ब्रह्मण्ड पुराण व अन्य पुराणों में भी शकद्वीप को क्षीर सागर से घिरा हुआ बताया गया है। बहुत सारे विद्वान इस क्षीर सागर के पौराणिक उल्लेख को अन्य द्वीपों से संलग्न समुद्रो की भांति काल्पनिक जगत का समुद्र मानते है। किन्तु अन्य पुराणेत्तर स्रोतों में इस क्षीर सागर का उल्लेख बहुतायत में हुआ है जिससे इसकी भौगोलिक सत्ता सिद्व होती है और यह तथ्य प्रमाणित होता है कि यह वास्तविक जगत का एक समुद्र है। मार्कोपोलो नामक अफ्रीकी यात्री ने अपने यात्रा–विवरण जिस शीरवान नामक समुद्र की चर्चा की है वह क्षीर सागर का प्रतिनिधि माना जा सकता है। फारसी भाषा में शीर शब्द का अर्थ मीठा है अतः फारसी शीर और क्षीर में साम्य है। ईरानी प्रदेश में आज भी एक नदी का नाम शीरीं है तथा ईरान के सीमावर्ती रूसी इलाके में 'मालोकन्या' नामक नदी बहती है, यह नाम 'मो–लो–को' नामक रूसी शब्द से व्युत्पनन है, जिसका अर्थ दूध है। यह मो–लो–को शब्द अंग्रेजी शब्द मिल्क से समानता रखता है। अतः क्षीर नदी की प्रतिनिधि नदियां इन दोनों नदियों को मान सकते है।

अनेक विद्वान शकद्वीप को आावृत्त किए हुए क्षीर सागर या 'शीरवान' की पहचान आधुनिक कैस्पियन सागर (कश्यपीय सागर) से करते है। आचार्य बलदेव उपाध्याय मानते हैं कि प्राचीन युग में आज का कैस्पियन सागर अपने पश्चिम में स्थित काला सागर से प्रारम्भ होकर साइबेरिया के उत्तर में विस्तृत आर्कटिक सागर तक विस्तारित था।

लगभग ई.पू. दूसरी शताब्दी में काश्यप समुद्र के तीरस्थ पूर्वी ईरान क्षेत्र में शकों के बस जाने के कारणही इस क्षेत्र को सीस्तान (शक स्थान) कहा जाने लगा। काश्यप समुद्र के किनारे स्थित इसी भू भाग को राहुल सांकृत्यायन आदि शक स्थान मानते है। पुराणों का शक या शाक द्वीप यही भू–भाग है जिसके सम्बन्ध में प्रमाण पूर्व में दिया जा चुका है। व्यापक रूप से अगर देखे तो यूरेशिया में डेन्यूब से लेकर थियनशान–अल्ताई पर्वतश्रेणी तक फैली शक जाति की भूमि ही संस्कृत साहित्य का शकद्वीप है।

शक मुख्यरूप से सूर्योपासक थे। सूर्य को 'स्वालियु' कहते थे। इस शब्द पर ध्यान दें तो यह शब्द सूर्य के काफी निकट है। शकों का 'ल' अक्षर से अत्यधिक प्रेम था और 'ल' के प्रयोग 'र' के स्थान पर किया, यदि 'स्वलियु' में 'ल' हटा कर'र' रखें तो यह सूर्य स्पष्ट रूप से दिखेगा। पुराणों के साथ–साथ यूनानी ग्रन्थों के भी पता चलता है कि सूर्य शकों के प्रमुख देवताथे। विष्णु पुराण इस तथ्य को स्पष्ट घोषित करता है–

शकद्वीपे तु तैर्विष्णुः सूर्यरूपधरो मुने।
यथोक्तैरिऽयते सम्यक कर्म भिर्नियताम्भि ।।

गरूड़ पुराण शाकद्वीपीय ब्राह्मणों के भारत आगमन की सूचना देता है जो सूर्योपासक थे। पश्चिमोत्तर भारत में शकों की भांति बूटधारी सूर्य–मूर्तियों का व्यापक प्रसार तथा ईसाई धर्म स्वीकार करने से पहले रूसी लोगों की सूर्य के प्रति भक्ति इस बात का प्रभाव है

शकों के मुख्य देवता सूर्य थे। और यह 'स्वलियु' देव दिवू (घौः) और अप्रिया (धावापृथ्वी) के पुत्र थे। इस प्रकार शकद्वीप के वर्णन में पुराणों के जो भौगोलिक और सांस्कृतिक तथ्यों का उल्लेख है वह वास्तविक इतिहास के काफी निकट बैठता है।

ब्रह्माण्ड पुराण व अन्य अनेक पुराणों में जिस द्वीप का सबसे अधिक विस्तृत विवरण मिलता है वह है– जम्बू द्वीप। वस्तुतः पुराणों में उल्लिखित कुश द्वीप, शकद्वीप व जम्बूद्वीप इन्हीं तीन द्वीपों की ही वास्तविक जानकारी अभी तक प्राप्त है।

प्रारम्भ में जम्बूद्वीप भारतवर्ष का ही पौराणिक नाम था। शकों और कुषाणों के आगमन के बाद पुराणकारों की भौगोलिक दृष्टि विस्तृत हुई और उस समय तक के अनेक अज्ञात देश भी उनकी ज्ञान सीमा में सम्मिलित हुए, सम्भवतः इसी काल में जम्बूद्वीप के नववर्षों की कल्पना पुराणों में की गई। नववर्षों में भारतवर्ष के बाहरी देशों को समाहित करते हुए भारत की विस्तृत सीमा निर्धारित की गयी। जम्बूद्वीप के इन नववर्षों में सुमेरू पर्वत के पार्श्व में इलावृत्त वर्ष, उसके पूर्व में भद्राश्व वर्ष, पूर्व में केतुमाल उत्तर में क्रमशः रम्यक वर्ष (नील पर्वत), हिरण्यम वर्ष (श्वेत पर्वत) तथा उत्तर कुरू (श्रंडगी पर्वत) है। दक्षिण में क्रमशः हरिवर्ष (निषध पर्वत) किं पुरूष वर्ष (हेमकूट पर्वत) तथा भारतवर्ष (हिमालय पर्वत)

भारतवर्ष का विस्तृत वर्णन ब्रह्माण्ड पुराण एवं अन्य पुराणों में किया गया है। इसकी भौगोलिक स्थति स्पष्ट रूप से ब्रह्माण्ड पुराण में बताई गई है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवत् दक्षिणं च यत्।
वर्षं तद्भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा।।

विष्णु पुराण में भी ठीक इसी तरह का श्लोक मिलता है। अर्थात् जो समुद्र के उत्तर और हिमवान (हिमालय) के द0 में है उसका नाम भारत वर्ष है तथा उसकी प्रजा भारती कहलाती है। भारतवर्ष नाम क्यों है? इसका कारण भी बताया गया है। मत्स्यपुराण व ब्रह्माण्ड पुराण को छोड़कर बाकी अन्य पुराणों में भी राजा भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा ऐसा बताया गया है। भरत कौन है? तो प्राचीन निरूक्ति कहती है कि स्वयम्भू मनु के पुत्र प्रियव्रत, उनके पुत्र नाभि, नाभि के पुत्र ऋषभ और ऋषभ के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र भरत ने राजसिंहासन ग्रहण किया और अपनी प्रजा का समुचित भरण–पोषण किया। इन्हीं भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा। मत्स्य पुराण में इस नामकरण के पीछे कुछ अलग कारण बताया गया है। मत्स्य पुराण व ब्रह्माण्ड पुराण में समानरूप से एक श्लोक कहा गया है–

भरणात् प्रजानाम् वै मनुर्भरत उच्चते।
निरूक्त वचनाच्चैव वर्ष तद् भारतं स्मृतम्

अर्थात प्रजा के भरण पोषण के कारण मनु ही भरत कहे गए है और उन्हीं के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। वायु पुराण के अनुसार भारतवर्ष नाम से पूर्व इस देश को हैमवत् वर्ष कहा गया। हिमालय द्वारा इसकी सीमा विभाजन करने के कारण संभवतः इसे हैमवतवर्ष कहा गया। किन्तु भागवतः पुराण के अनुसार भारतवर्ष से पूर्व इसे 'अजनाभवर्ष' कहा जाता था। 'अजनाभ' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है– अज (अजन्मा भगवान विष्णु) की नाभि पर स्थित देश। ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु के नाभिकमल पर निवास करते हुए जिस प्रथम लोक की रचना की उसे 'अजनाभ वर्ष' कहा गया। यही देश मानवों की उत्पत्ति का मूल स्थान है और यहीं से उसका प्रसार चतुर्दिक रूप से अन्य देशों में प्रसार हुआ। मनुस्मृति कहती है–

एतद्देश प्रसूतस्य ए काशाद ग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

इस विवरण से हम कह सकते है कि आर्य–जाति का मूलस्थान भारतवर्ष ही है। पुराणों में भारतवर्ष को ही आर्य संस्कृति का मूलस्थान माना जाता है।

पुराणों में भारतवर्ष की प्रशस्ति मुक्तकंठ से बारम्बार गायी गयी है। ब्रह्माण्ड पुराण में कहा गया कि यहीं पर स्वर्ग, मोक्ष, मध्य और अन्तगति होती है। इस देश के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी पृथ्वी पर कर्म विधान नहीं है, अर्थात, यही पर लोग पाप–पुण्य आदि कर्मों के फल–भोग का विधान करते है–

इतः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यश्चान्तश्च गम्यते।
न खल्वन्यत्र मर्त्यानां मूमौ कर्म विधीयते।।

इसी तरह के भारतवर्ष–प्रशस्ति के श्लोक अन्य पुराणों में भी मिलते हैं। विष्णु पुराण में कहा गया है–

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने।
यतो कि कर्मभूरेषा ह्मतोऽन्या भोग भूमयः।।

भारतवर्ष में रहने वाले मानव देवों से भी बढ़कर है क्योंकि वे अपने भाग्यनिर्माता स्वयं है। कर्म संकल्प की स्वतंत्रता के कारण भारतवासी स्वर्ग के भोगों के लिए आसक्त देवताओं से भी बढ़कर है। यहां तक कि स्वयं देवता भी, भारतवर्ष की प्रशस्ति का गान करते है–

गायन्तिदेवा किल गीतिकानि,
धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे।
स्वर्गापवर्गास्पद मार्ग भूते,
भवन्ति भूयः पुरूषाः सुरत्वात्।।

पुराणों में गायी गयी इस प्रशक्ति के पीछे संभवतः गुप्त साम्राज्य की स्वर्ण युगीन उपलब्धियां है। यह वह काल खण्ड था जब भारतवर्ष धर्म, अध्यात्म, भौतिक प्रगति तथा आर्थिक–राजनीतिक– सांस्कृतिक क्षेत्र में विश्व में अग्रणी था। इस देश के साहसिक पराक्रमी नाविकों ने समुद्रों को पारकर द0पू0 एशियाई देशों–

जावा, सुमात्रा, बाली, बोर्निया, फिलीपीन्स आदि में अपनी सभ्यता की ध्वजा फहरायी थी। म्यांमार, थाईलैण्ड में भारतीय संस्कृति प्रधानता के साथ स्थापित हो रही थी। इन देशों के शासक स्वयं को भारतवर्ष के शासकों का वंशज मानने में गौरव की अनुभूति कर रहे थे।

यह वहीं युग था जब भारतीयों ने अपने भीतर की शक्तियों का अनुभव किया था और उसके प्रकाश से समस्त विश्व को प्रकाशित किया था। इस युग में अधिकांश पुराणों के मौलिक रूप संकलित किए गए और इन पुराणों में घोषित किया गया कि भारत के समान पृथ्वी पर कोई अन्य देश नहीं यह अनुपम और अद्वितीय देश है, भारतवर्ष ही मानव कल्याण व मंगल का मूल है। ब्राह्मण्ड पुराण में भारतवर्ष के नवखण्डों का विभाजन किया गया है–

इन्द्रद्वीप कशेरू भीरताम्र वर्णो गभस्ति मान।
नाभद्वीपस्तथा सौम्यो गांधनस्वथ वारूणः।।

1. इन्द्रद्वीप
2. कसेरू
3. ताम्रपर्ण
4. गभास्तिमान
5. नागद्वीप
6. सौम्य
7. गन्धर्व
8. वारूण
9. भारतवर्ष

मत्स्य मार्कण्डेय, वायु आदि पुराणों में भी भारतवर्ष के इस नवखण्डात्मक विभाजन का उल्लेख है। नौवें द्वीप के रूप में 'अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः' वाक्य यह प्रकट कर रहा है कि पुराणकार सागर से घिरे इसद्वीप में ही कहीं बैठकर लिख रहा है। इस नौवें द्वीप का स्पष्ट नामोल्लेख ब्राह्मण्ड या उपर्युक्त पुराणों में नहीं किया गया है। किन्तु वामन पुराण में इस नौंवे द्वीप का स्पष्ट नाम कुमार द्वीप (कुमारी द्वीप) बताया गया है।

अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागर संवृतः।
कुमाराख्यः परिख्यातो द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरः।।

जब गुप्तकाल में भारतवर्ष के सांस्कृतिक विस्तार के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्म, दर्शन, भाषा एवं साहित्य आदि का विस्तार पूर्वी द्वीपीय देशों में हुआ तब इन द्वीपों को भी भौगोलिक रूप से भारत वर्ष में गिना जाने लगा। स्वयं इन द्वीपों के शासक अपना सम्बन्ध भारतीय राजवंशों एवं सूर्यवंश, चन्द्रवंश आदि से जोड़ने लगे तब एक बृहत्तर भारत वर्ष की परिकल्पना साकार हुई। संभवतः इस बृहत्तर भारत में मुख्य भारत भूमि को तब कुमारी द्वीप नाम साहित्य एवं शास्त्रों में दिया गया। वामन पुराण में तो स्पस्ट रूप में कह दिया गया है कि जो अब तक भारत के नाम से जाना जाता था वही अब कुमारी द्वीप के नाम से जाना जाता है।

इमे तवोक्ता विषयाः सुविस्ताराद्
द्वीपे कुमारे रजनी चरेश।

ये नौ खण्ड, जो आपस में समुद्र द्वारा विभाजित थे, के अधिकांश पौराणिक नामों का तादात्म्य वर्तमान भौगोलिक देशों के साथ बिठाया जा सकता है। मुख्य भारत भूमि अर्थात् कुमारिकाखण्ड के अतिरिक्त जो शेष आठ खण्ड बृहत्तर भारत के थे उन्हें कालिदास ने भी द्वीपान्तर कहकर अभिधान किया है। इनमें इन्द्रद्वीप की पहचान अंडमान द्वीप से की गई है। नागद्वीप की पहचान नागवरं (चोल अभिलेखों में नक्कवरं) अर्थात् निकोवार द्वीप से कीजा सकती है। ताम्रपर्णि असंदिग्ध रूप से श्रीलंका है। वारूण द्वीप को बोर्नियों द्वीप से पहचाना जा सकता है। जबकि कसेरूमान संभवतः मलयद्वीप है। गभस्तिमान संभवतः वियतनाम हो सकता है। सौम्य की पहचान कम्बोडिया एवं गंधर्वद्वीप की पहचान थाइलैण्ड से की जा सकती है।

ब्रह्माण्ड पुराण के साथ–साथ अन्य पुराणों में (मत्स्य, मार्कण्डेय आदि) में इस कुमारीद्वीप के चारों ओर रहने वाली जातियों का उल्लेख ऐतिहासिकमहत्व का है। इस द्वीप के पूर्वोत्तर सीमा पर किरात एवं इसके पश्चिमोत्तर सीमा पर यवनों का उल्लेख है। इसका अर्थ है बैक्ट्रिया का यवन राज्य भारत की पश्चिमी उत्तरी सीमा से लगता था। वामन में कुमारीद्वीप के अन्तर्गत उत्तर में तुरूष्क (अर्थात शक कुषाण) तथा द0 में आन्ध्र (अर्थात् आन्ध्र सातवाहन राज्य) का उल्लेख है। यह ऐतिहासिकतथ्य है कि ईसा पूर्व की प्रथम शताब्दी एवं प्रथम शताब्दी ई0 में तक्षशिला में पहले शक एवं बाद में कुषाण शासन कर रहे थे।

पुराणों में वर्ष पर्वत एवं कुल पर्वत–दो प्रकार के पर्वतों की चर्चा है। वर्ष पर्वत उन्हें कहा गया है जो एक वर्ष से दूसरे वर्ष को अलग करते है। जैसे भारत वर्ष से किंपुरूष वर्ष को हिमालय (हिमवत गिरि) अलग करता है। अतः हिमालय वर्ष पर्वत है। जबकि एक वर्ष के भीतर प्रान्तों की सीमा निर्धारित करने वाले पर्वत कुल पर्वत कहे गए है। भारत वर्ष में सात (07) कुल पर्वत पुराणों में बताए गए है–

1. विन्ध्य – आज का विन्ध्याचल जो मोटे तौर पर मुख्य भारत भूमि को दो भागों – उत्तरी भारत तथा दक्षिणी भारत में बांटता है। इस पर्वत से नर्मदा, ताप्ती, महानदी, सोन, टोंस आदि नदियां निकलती है।
2. महेन्द्र पर्वत – उत्तर में कलिंग (उड़ीसा) से दक्षिण में आंध्र के दक्षिणवर्ती प्रदेशों तक विस्तृत पूर्वी घाट की पर्वत श्रृंखला को पुराणों में महेन्द्र पर्वत कहा गया है। ब्रह्माण्ड

पुराण में परशुराम का तप के लिए महेन्द्र पर्वत पर जाने का उल्लेख है।

3. सह्याद्रि– महाराष्ट्र के तटवर्ती प्रदेश में विस्तृत प0 घाट की यह पर्वतमाला जो कोंकण में अभी इसी नाम से प्रसिद्व है।

4. मलय – यह पूर्वी घाट और प0 घाट की पर्वत मालाओं का द0 भारत में मिलन बिन्दु है। पुराणों में इस पर्वत पर चन्दन के वृक्ष उत्पन्न होने का उल्लेख है। वर्तमान में यह नीलगिरि पर्वत के रूप में जाना जाता है।

5. शुक्तिमान् – संभवतः सह्याद्वि के उत्तरी छोर का पूर्व दिशा में जो विस्तार है उसे शुक्तिमान के रूप में जाना जा सकता है। खानदेश, व विदर्भ क्षेत्र के पहाड़ इसमें सम्मिलित है।

6. ऋक्ष पर्वत – संभवतः सतपुड़ा से निकलकर छोटा नागपुर पठार तक विस्तृत पर्वत श्रृंखला ही पैराणिक ऋक्ष पर्वत है।

किन्तु पौराणिक भूगोल विषयक ज्ञान कल्पना प्रसूत नहीं है, इतना तो असंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है।

7. पारियात्र – अरावली पर्वत माला को पुराणों में पारियात्र पर्वत भी कहा गया है। पुराणों में इस पारियात्र से निकलने वाली नदियों का उल्लेख है जिसमें पर्णास (बनास) वेत्रवती (वेतवा), चर्मवती (चम्बल), माही आदि प्रमुख है।

ब्रह्माण्ड पुराण भारत वर्ष के बारे में केवल शुष्क भौगोलिक विवरण ही नहीं देता अपितु वह भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों का भी वर्णन करता है जिसका विशेष ऐतिहासिक महत्व है।

इस प्रकार ब्रह्माण्ड पुराण का भूगोल विषयक वर्णन यथार्थ के निकट है। कुछ अन्य शोधपरक विषयों के आलोक में आने वाले समय में निश्चय ही इसमें वर्णित अनेक अबूझ भौगोलिक वर्णनों को यथार्थ से समीकृत किया जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वायु पुराण : अध्याय 34, श्लोक सं. 37
2. ब्रह्माण्ड पुराण : पूर्वभाग अनुषंग पाद–2 अध्याय, 15, श्लोक सं0 18
3. इलावृतं तु तन्मध्ये सौवर्णों मेरूरूच्छ्रितः अग्नि पु0 108/9
4. ब्रह्माण्ड पुराण : पूर्वभाग अनुषंग पाद–2 अध्याय, 15, श्लोक सं0 17
5. वही
6. डॉ0 हर्ष आर0जी0 : मेरू होमलैण्ड ऑफ दि आर्यन्स लेख विश्वेश्वरानन्द भारत भारती लेखमाला, होशियारपुर पंजाब, 1964
7. आचार्य उपाध्याय, बलदेव : पुराण विमर्श, चौखम्बा विद्या भवन प्रकाशन पुनर्मु0 संकरण 2015, पृष्ठ सं. 320
10. ब्रह्माण्ड पुराणःअध्याय –16 (अनुषंग पाद 2) श्लोक – 07
11. विष्णु पुराण : अंश–2 अध्याय 03, श्लोक–04
12. ब्रह्माण्ड पुराण : अध्याय 47: (उपोद्घात पाद–3) श्लोक51–
8. मत्स्य पुराण : अध्याय 112, श्लोक सं0 43–44
9. ब्रह्माण्ड पुराण : अध्याय 19 (पूर्वभाग अनुषंगपाद) श्लोक – 03
13. ब्रह्माण्ड पुराण : अध्याय 19 (पूर्वभाग अनुषंगपाद) श्लोक – 52
14. आचार्य उपाध्याय, बलदेव : पुराण विमर्श चौखम्बा वि0भ0 प्रका0 पुनर्मु0 संस्करण 2015 पृ0 सं0 324
15. भविष्य पुराण : अध्याय 01, श्लोक सं. 139
17. आचार्य उपाध्याय, बलेदव : पु0 विमार्श पृ0 सं. 328
18. सांकृत्यायन, राहुल : मध्य ए शिया का इतिहास, खण्ड प्रथम, पटना 1960 पृ0 सं0 64–70
19. विष्णु पुराण : अंश–2 अध्याय 04, श्लोक–70
20. विष्णु पुराण : अंश–2 अध्याय 02
21. ब्रह्माण्ड पुराण : अध्याय –16 (अनुषंग पाद 2) श्लोक– 05–06
22. भागवत पुराण : अंश 5, अध्याय 07, श्लोक 03
23. वामन पुराण : अध्याय 13 श्लोक 04
24. वामन पुराण : अध्याय 13, श्लोक